वर्जित गांठ

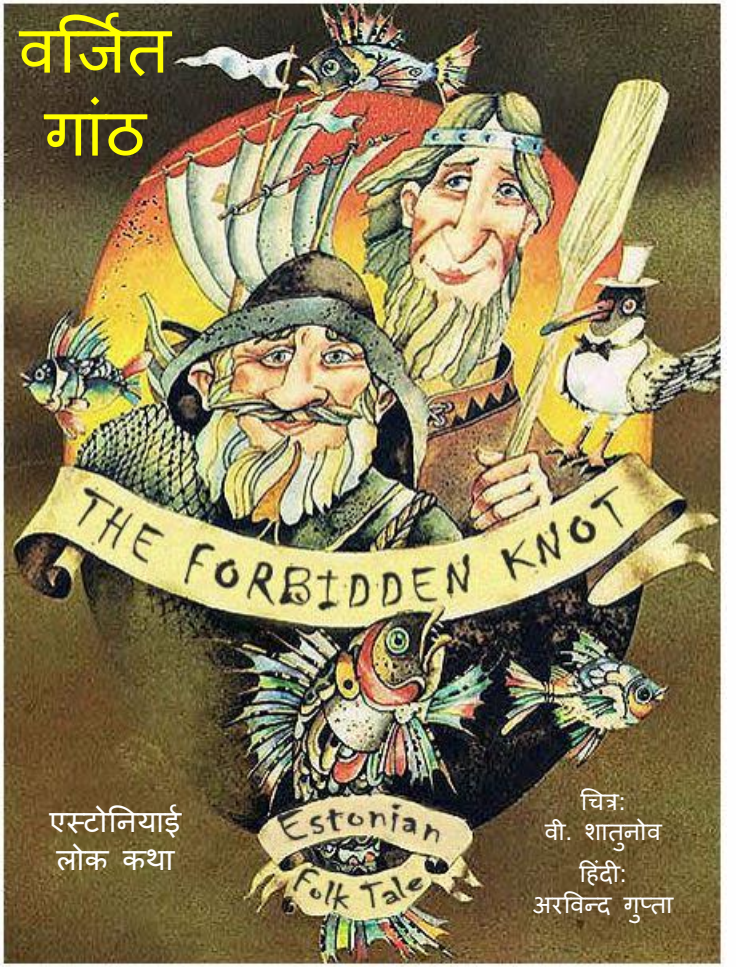

एस्टोनियाई
लोक कथा

चित्र:
वी. शातुनोव

हिंदी:
अरविन्द गुप्ता

मछली पकड़ने वाले गांव के लिए वो एक बुरा वर्ष था. पतझड़ के बाद से ही मछलियों की पकड़ बिल्कुल कम हो गई थी, और वसंत तक लोगों के भंडार खाली हो गए थे. मछुआरे के पास मछली न होना किसान के पास अनाज न होने जैसा था. जब मछली नहीं होगी तो पूरा गांव भूखा रहेगा.

फिर सब मछुआरे इकट्ठे हुए और उन्होंने अपना दिमाग लगाया. वे क्या कर सकते थे? समुद्र में मछली पकड़ने जाने के लिए अभी जल्दी थी, लेकिन घर पर बैठे रहना निश्चित रूप से बर्बादी होती.

फिर उन्होंने सोचा-विचारा, फिर अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया.

"शायद समुद्र हम पर दया करे और कम-से-कम हम खाने के लिए कुछ मछलियां जरूर पकड़ पाएं!"

तभी एक मछुआरे ने कहा:

"मुझे नहीं पता कि यह सच है या नहीं, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि बूढ़ा कारेल समुद्र की रानी का मित्र है. उसे पता होना चाहिए कि मछलियां कैसे पकड़ी जाएं."

"मुझे भी इसके बारे में कुछ याद आ रहा है." दूसरे ने कहा, "मैं जब एक लड़का था तब मेरे दादाजी कहते थे कि बूढ़े कारेल में कुछ विशेष चीज़ है जो हर मौसम में मछलियों को आकर्षित करती है. हम क्यों न जाकर उस बूढ़े आदमी से मिलें. शायद वो हमें अपनी किस्मत आज़माने के लिए कुछ सलाह दे."

बूढ़े कारेल का घर गांव के ठीक किनारे पर था. किसी समय वो एक बहादुर और सफल मछुआरा था. लेकिन समय ने बहुत पहले ही उसकी पीठ झुका दी थी. फिर उसने न केवल समुद्र में जाना बंद कर दिया था, बल्कि वो शायद ही कभी अपने छोटे से घर की दहलीज से बाहर निकलता हो. लेकिन जब मछुआरों ने उसका दरवाज़ा खटखटाया, तो बूढ़ा कारेल उनके पास आया और उसने कहा:

"मुझे पता है कि आप मेरे पास क्यों आए हैं, दोस्तों, और मुझे आपसे सिर्फ यही कहना है: एक अच्छा मछुआरा अपने कौशल और अपने हाथों की ताकत पर भरोसा करता है, न कि अच्छे भाग्य पर. लेकिन आपने एक बड़ा कठिन काम अपने हाथ में लिया है. आप सीज़न शुरू होने से पहले ही समुद्र में जा रहे हैं, और समुद्र को वो बात पसंद नहीं है. कोई बात नहीं, आप लोग बहादुरी से आगे बढ़ें और मैं आपकी मदद करूंगा."

इतना कहकर बूढ़े कारेल ने अपनी गर्दन से एक रूमाल निकाला और मछुआरों को दिखाया.

“इस रूमाल में लगी तीन गांठें देखो. पहली गांठ आपके लिए अच्छी हवा लेकर आएगी. नाव की पाल फहराने के बाद आप उस गांठ को खोल दें. दूसरी गांठ मछलियों को आपके जाल में खींचेगी. जैसे ही आप अपने जाल फेंकें, वैसे ही दूसरी गांठ को खोल दें. पर तीसरी गांठ को कभी नहीं खोलें. यदि आप वो करेंगे तो वो आपके लिए बदकिस्मती लाएगी. हां एक बात और है. समुद्र तुम्हें जो भी दे उससे संतुष्ट रहना. तुम्हें चाहें जितनी भी मछली मिलें अपने जाल को दुबारा मत फेंकना.”

"चिंता मत करो, कारेल," मछुआरों ने उससे वादा किया. “आपने जैसा कहा है हम वैसा ही करेंगे. हम आपको अपना वचन देते हैं.”

"याद रखना कि नाविक अपने किए वादे से कभी नहीं मुकरते हैं," बूढ़े व्यक्ति ने मछुआरों को अपना रुमाल सौंपते हुए कहा.

पूरी रात मछुआरों ने अपनी नाव की मरम्मत की और अपने जाल दुरुस्त किये. सुबह तक सब कुछ तैयार हो गया.

मछुआरे नाव में कूदे और फिर धक्का देकर पानी में निकले. वे जल्द ही खाड़ी से बाहर आ गए और उन्होंने पाल फहराई. कैप्टन ने बूढ़े कारेल का रूमाल निकाला और कहा:

"चलो पहली गांठ खोल दें."

उन्होंने पहली गांठ खोल दी. तुरंत तेज़ हवा चली, पाल भर गए और नाव तेज़ी से दौड़ने लगी.

नाव बिना पतवार के चाकू की तरह लहरों को काटते हुए, शानदार ढंग से आगे बढ़ी. अब मछुआरे खुले समुद्र में बहुत दूर निकल गए. अचानक हवा कम हो गई, पाल ढीला हो गया और नाव रुक गई.

"यह वही जगह होगी जिसके बारे में बूढ़ा कारेल बात कर रहा था." मछुआरों ने कहा, "चलो यहीं पर अपना जाल डालते हैं."

इसलिए सभी लोग काम करने के लिए तैयार हुए. उन्होंने लंगर डाला, जाल फैलाया और उसे समुद्र में डाला.

“अब दूसरी गांठ खोलो!” मछुआरे चिल्लाये.

कैप्टन ने बूढ़े कारेल का रुमाल अपनी जैकेट से निकाला और फिर दूसरी गांठ खोल दी. जैसे ही उसने उसे खोला, समुद्र में मछलियां थिरथिराने लगीं जिससे जालों से लगे "फ्लोट" बेतहाशा उछलने लगे.

मछुआरे सब कुछ शांत होने तक इंतजार करते रहे, फिर उन्होंने सावधानी से अपने जाल खींचे. उनके जाल पहले कभी इतने भारी नहीं थे. मछुआरों को उन्हें अपनी पूरी ताकत से खींचना पड़ा. आख़िरकार जाल का किनारा पानी के ऊपर दिखाई दिया. जाल मछलियों से भरे हुए थे. मछलियों के शल्क चांदी की धूप में इतने चमक रहे थे कि उनकी आंखें चौंधिया गईं.

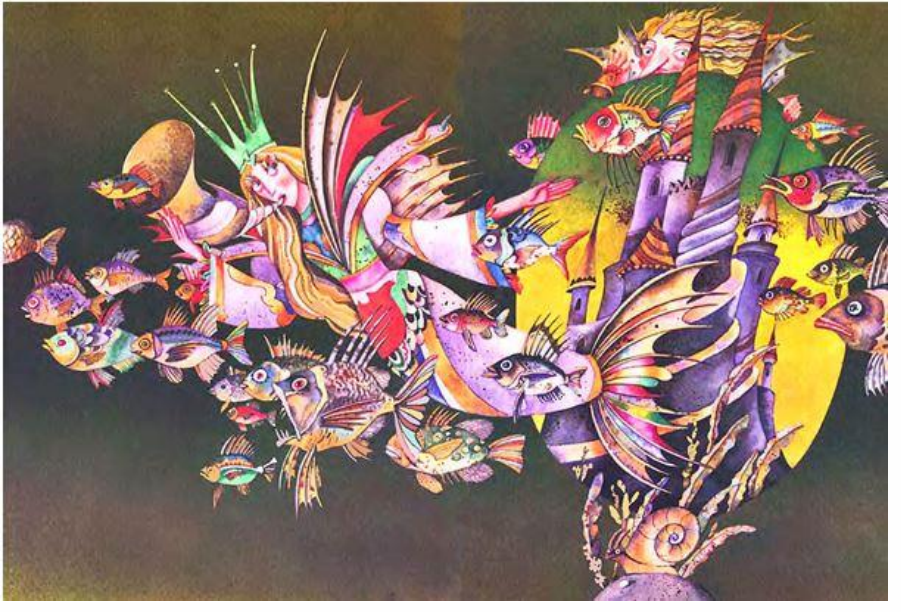

“जाल खींचो, मेरे लड़कों!” कप्तान ने आदेश दिया.

मछुआरों ने जाल खींचा और मछलियां नाव में गिर गईं.

"आज हम बढ़िया मछलियां पकड़ पाए!" मछुआरों में से एक ने कहा. "उसके लिए बूढ़े कारेल का धन्यवाद."

“वो ठीक है,” दूसरे मछुआरे ने उत्तर दिया. “लेकिन मछली पकड़ने के मौसम की शुरुआत तक सभी को ज़िंदा रखने के लिए, हमें इससे तीन गुना कैच की जरूरत होगी. हम फिर से जाल क्यों नहीं डालें, दोस्तों?”

"तुम क्या कह रहे है?" सबसे कम उम्र के मछुआरे ने चिल्लाकर कहा. "याद है कि बूढ़े कारेल ने हमसे क्या कहा था: समुद्र तुम्हें जो दे, उससे संतुष्ट रहो."

"देखो हमारी ज़रूरतें वास्तव में काफी छोटी हैं," कप्तान ने हंसते हुए कहा. "लेकिन हमें उस नाव के साथ घर जाने में शर्म आएगी जो पूरी तरह से भरी न हो."

इसलिए मछुआरों ने फिर से अपना जाल डाला.

लेकिन इस बार वे उतने भाग्यशाली नहीं थे. उन्होंने जब जाल खींचे तब वे खाली थे. उन्होंने एक भी मछली नहीं पकड़ी.

मछुआरों का उत्साह कम हो गया, लेकिन कप्तान ने कहा:

"ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने बूढ़े कारेल के रूमाल में तीसरी गांठ को नहीं खोली है. वो कोई साधारण रूमाल नहीं है, जैसा कि आप स्वयं देख सकते हैं. प्रत्येक गांठ सफलता लाती है. एक गांठ बची है, अगर हम उसे भी खोल देंगे तब हमारी नाव पूरी तरह भर जाएगी."

"लेकिन, कप्तान," अब सबसे बुजुर्ग मछुआरा बोला. "बूढ़े कारेल ने हमें उस गांठ को छूने तक से मना किया था."

"आप स्वयं एक बूढ़े व्यक्ति हैं." कैप्टन ने उत्तर दिया, "बूढ़े लोगों के बारे में एक और प्रसिद्ध कहावत है - अपनी किस्मत को तीसरी बार मत आज़माओ. लेकिन एक और कहावत भी है - केवल एक मूर्ख ही अच्छे भाग्य को ठुकराता है."

"आपकी बात सही है." मछुआरों ने कहा, "चलें हम उसे भी आज़मायें! तीसरी गांठ खोल दें, कप्तान."

कैप्टन ने पहले ही रूमाल तैयार रखा था. उसने तीसरी गांठ खींची और खोल दी. तुरंत समुद्र गर्जना करने लगा, लहरें तट से ऊपर उठने लगीं और जालों पर मछलियां पागलों की तरह नाचने लगीं.

"देखो उन मछलियों को!" कप्तान ने कहा. "मैंने कहा था ना!"

मछुआरे इतने खुश हुए कि वे जाल खींचने का समय आने तक इंतजार नहीं कर सके. फिर, पहली बार की तरह, जाल बहुत भारी लग रहा था. लेकिन मछुआरे काफी मजबूत थे. उन्होंने रस्सियों को जोर से खींचा और जाल को नाव में खींच लिया. लेकिन एक मिनट रुकें! जाल में क्या था! जाल में केवल एक मछली थी. कटी पूंछ वाली एक विशाल पाइक मछली, मानो उसका सिरा कुल्हाड़ी से काट दिया गया हो.

"क्या आपने पहले कभी ऐसी मछली देखी है!" मछुआरे गुस्से से पाइक मछली को नाव में फेंकते हुए चिल्लाए.

इस बीच सूरज क्षितिज पर डूब रहा था. सूर्यास्त के करीब आते-आते समुद्र शांत हो गया.

अचानक शांत पानी में कुछ आवाजें आने लगीं. मछुआरे उछल पड़े और वे अपने चारों ओर देखने लगे.

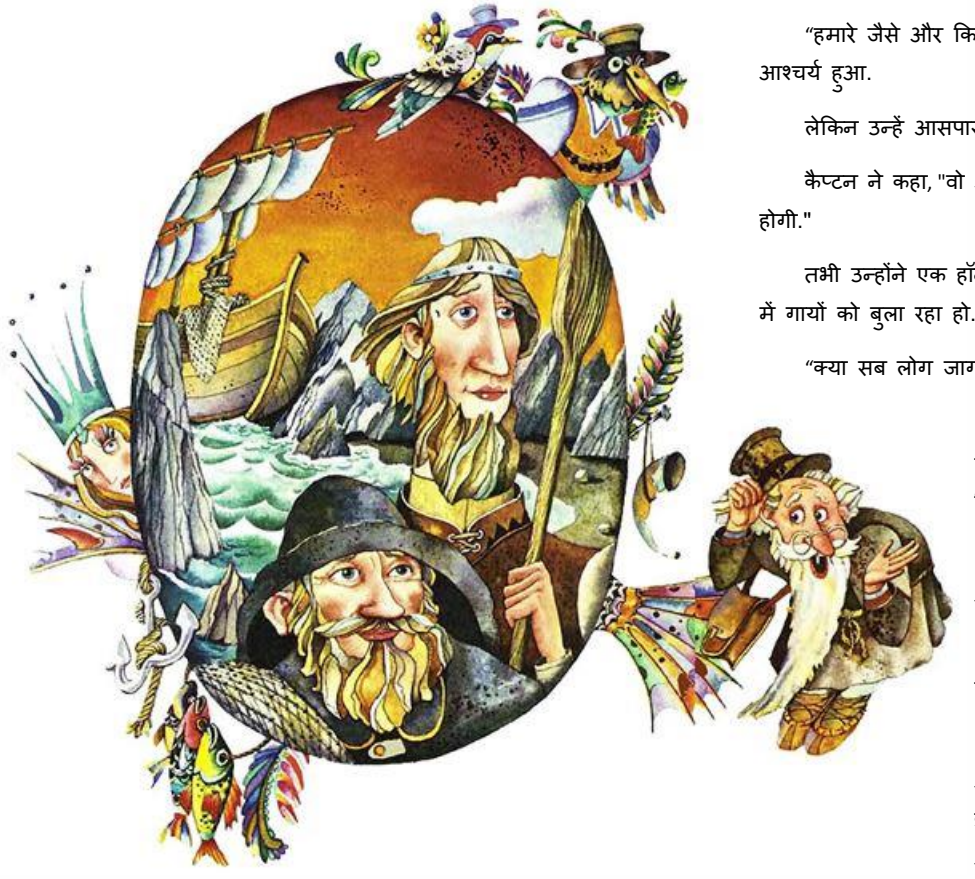

“हमारे जैसे और किसको भूख ने समुद्र में धकेला है?” उन्हें आश्चर्य हुआ.

लेकिन उन्हें आसपास और नाव नहीं दिखाई दी.

कैप्टन ने कहा, "वो अवश्य ही कोई सीगल (समुद्री-चील) रही होगी."

तभी उन्होंने एक हॉर्न की लंबी, तेज़ आवाज़ सुनी, जैसे कोई गांव में गायों को बुला रहा हो. और फिर एक महिला की आवाज़ ने पूछा:

“क्या सब लोग जाग रहे हैं? क्या सब लोग घर पर हैं?”

“हां, बिना पूंछ वाले मूर्ख को छोड़कर सभी लोग,” एक युवा लड़की की मधुर आवाज़ ने उत्तर दिया.

हार्न फिर से बजने लगा, और इस बार वो और भी तेज़ और लंबी देर तक बजा.

अचानक नाव में पाईक मछली थरथराने लगी.

उसने अपना तेज़ दांत वाला मुंह पूरा खोला और अपनी पूरी ताकत से दूसरी मछलियों को झटका दिया. लेकिन कप्तान ने उसे लात मारी और वो चालक दल की ओर जोर से चिल्लाया:

“लंगर उठाओ! मुझे वो जीव पसंद नहीं है. चलो, हम जितनी जल्दी हो सके यहां से निकल पड़ें.''

मछुआरों ने लंगर उठाया और नाव को अपने मूल तट की ओर मोड़ दिया.

लेकिन अब क्या! चाहे उन्होंने कितनी भी जोर से चप्पू चलाया नाव अपनी जगह से हिली तक नहीं. मानो समुद्र जम गया हो या नाव समुद्र तल में अटक गई हो. उन्होंने एक-साथ और जोर से खींचा, लेकिन वो एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सके.

पूरी रात मछुआरे मेहनत करते रहे, निराशा में चप्पुओं को नीचे फेंकते रहे, फिर दोबारा कोशिश करने के लिए उन्हें उठाते रहे, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. ऐसा लग रहा था कि दुनिया की कोई भी चीज़ उनकी नाव को हिला नहीं सकती थी.

जब भोर की पहली किरण पूर्व में दिखाई दी तो उन्हें फिर से अजीब आवाजें सुनाई दीं.

“क्या सब लोग जाग रहे हैं? क्या सब लोग घर पर हैं?”

“उस बिना पूंछ वाले मूर्ख को छोड़कर हर कोई जाग रहा है और घर पर है. अभी भी अभी तक उसका कोई सुराग नहीं मिला है.”

तभी फिर से हार्न की आवाज और छोटी घंटियों की झंकार सुनाई दी. अचानक नाव में मौजूद मछलियों में हलचल मच गई. अपने तेज़ दांत वाले मुंह खोलकर और अपने गलफड़ों को हिलाते हुए, वो नाव के किनारे ऊपर की ओर छटपटाने लगीं.

"अब वो राक्षस क्या कर रहा है?" कप्तान बुदबुदाया. अचानक उसने सोचा: "शायद वे उसी का इंतज़ार कर रहे हैं."

कप्तान ने छलांग लगाई, उसने पाइक को पकड़ा और उसे पानी में फेंक दिया.

उसी क्षण किसी दूर, शायद समुद्र तल पर, किसी ने ताली बजाई और खुशी से रोया:

"देखो देखो! बिना पूंछ वाला वो मूर्ख तैरकर घर आ रहा है. वो इतनी जल्दी में है कि वो बुलबुले उड़ा रहा है!”

मछुआरों ने फिर कुछ नहीं सुना. तेज़ भयानक आंधी चली और लहरें इतनी ज़ोर से गरजीं कि मछुआरे एक दूसरे की आवाज़ भी नहीं सुन सके.

नाव लहरों में बह गई.

सारा दिन मछुआरे उफनते समुद्र में छटपटाते रहे. नाव बादलों की तरह ऊपर उड़ती, फिर बहुत गहराई तक नीचे गिरती. बूढ़े मछुआरों ने अपनी ज़िंदगी में ऐसा तूफ़ान पहले नहीं देखा था.

शाम होते-होते वे एक चट्टानी द्वीप पर पहुंचे. मछुआरे किनारे पर कूद पड़े और नाव को सूखी भूमि पर खींच ले गए.

"यह कौन सा द्वीप है?" उन्होंने एक दूसरे से पूछा. "तूफ़ान हमें कहां ले आया है?"

उसी समय एक चट्टान के पीछे से एक छोटा बूढ़ा आदमी प्रकट हुआ. उसकी पीठ लगभग दोगुनी झुकी हुई थी, और उसकी सफ़ेद दाढ़ी बिल्कुल ज़मीन को छू रही थी.

"यह हिउ-माँ द्वीप है." बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "आश्चर्य है कि आप इसे नहीं जानते. लोग अपनी मर्जी से शायद ही यहां पर कभी आते हों."

बूढ़ा आदमी मछुआरों को चट्टानों के पीछे एक लकड़ी की झोपड़ी में ले गया, जहां उसने उन्हें गर्म किया और खाना खिलाया, फिर पूछा:

"आप कौन हैं और कहां से हैं, और आप इस सीज़न में इतनी जल्दी मछली क्यों पकड़ रहे हैं?"

"इसके सिवा हम और क्या कर सकते थे! हमारे भंडार खाली हैं, गांव में खाने के लिए कुछ भी नहीं है, मछुआरों ने उत्तर दिया और बूढ़े आदमी को वो सब बताया जो उनके साथ हुआ था. केवल एक ही बात उन्होंने छिपा रखी थी - कि कैसे उन्होंने बूढ़े कारेल के रुमाल पर लगी तीसरी, वर्जित, गांठ को खोल दिया था.

बूढ़े ने उनकी बात सुनी और कहा:

"तुम्हारे उस कारेल को तो मैं जानता था. क्या तुम्हें पता है कि उसने तुम्हारी नाव कहां भेजी है? समुद्री-रानी के चरागाहों में, जहां वो अपनी मछलियां रखती है. लेकिन उसकी मछलियां चतुर हैं, वे कभी पकड़ी नहीं जाती हैं. तुम्हारे द्वारा पकड़ी गई मछलियों के ढेर दूर-दूर से सी समुद्री-रानी की मछलियों के झुंडों के साथ चरने के लिए आए थे. लेकिन वो बिना पूंछ वाला पाइक तुम्हारे जाल में कैसे आ गया, वो मैं समझ नहीं पाया. तुम भला उसे कैसे पकड़ पाए?"

तब मछुआरों को एहसास हुआ कि कारेल ने उन्हें किससे बचाने की कोशिश की थी, लेकिन मछुआरों ने बूढ़े व्यक्ति से कुछ नहीं कहा. उनके हौंसले पस्त हो गए थे. समुद्र में तूफ़ान अभी भी उग्र था, हवा चिमनी से नीचे गिर रही थी, और भारी स्प्रे खिड़की पर पड़ रहा था. लगातार बेहद ख़राब मौसम बना हुआ था.

बूढ़े व्यक्ति ने मछुआरों को झोपड़ी के एक कोने में कुछ पुराने जालों पर लिटाया और वे गहरी नींद में सो गए.

भोर होने पर बूढ़े ने उन्हें जगाया. बाहर तूफ़ान अभी भी तेज़ था और लहरें चट्टानों से टकरा रही थीं. मछुआरों का दिल भारी था.

"अब हम क्या करें?" उन्होंने बूढ़े व्यक्ति से पूछा. "हम यहां से कभी नहीं जा पाएंगे, और हमारे भूखे बच्चे घर पर हमारा इंतजार कर रहे होंगे."

“कभी मत डरो,” बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया. “शायद तुम बच पाओगे. मुझे बूढ़े कारेल का रूमाल दो.

कैप्टन ने अनिच्छा से रूमाल निकाला और बूढ़े को दे दिया.

बूढ़े ने रुमाल की ओर देखा और सिर हिलाया.

“मैंने इसे पहले भी एक बार देखा है. मुझे केवल इतना याद है कि उसमें तीन गांठें थीं. आपने उनमें से सिर्फ दो को खोलना था, ऐसा आपने स्वयं मुझसे कहा था, परन्तु तीसरी गांठ कहां है?”

अब मछुआरे बिचारे क्या करते? उन्होंने बूढ़े को सारी सच्चाई बता दी.

बूढ़े ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं .

"तुम लोग बुरे मछुआरे हैं!" उसने कहा. "तुमने बूढ़े कारेल की बात नहीं मानी और तुमने मुझे भी धोखा देने की कोशिश की."

मछुआरों का सिर शर्म से झुक गया.

"ठीक है," बूढ़े व्यक्ति ने कहा. “मैं देख सकता हूं कि तुम्हें पहले ही सज़ा मिल चुकी है. बूढ़े कारेल और आपके भूखे बच्चों की खातिर, मैं तुम्हारी मदद करूंगा.

तब बूढ़े ने रूमाल लिया, उसमें एक गांठ बांधी और कहा:

"सुनिश्चित करना और अब से अपने किए वादे पर इस गांठ की तरह मजबूती से दृढ़ रहना."

जैसे ही उसने गांठ को कसकर खींचा, हवा कम हो गई और लहरें शांत हो गईं, जैसे कि कभी तूफान आया ही न हो.

मछुआरों ने बूढ़े व्यक्ति को धन्यवाद दिया और वे अपनी नाव की ओर चल पड़े.

बूढ़ा उनके साथ समुद्र के किनारे तक गया. जैसे ही उन्होंने पाल फहराया, उसने विदाई में अपना हाथ हिलाया. और तुरन्त एक हलकी सी हवा पाल में भर गई और नाव शान्त समुद्र में दौड़ने लगी.

मछुआरे उसी दिन घर पहुँच गये.

उनके दोस्तों और परिवारों ने उनका खुशी से स्वागत किया.

और उनके द्वारा पकड़ी हुई मछलियां सीज़न की शुरुआत तक चलीं.

अंत भला तो सब भला. लेकिन मछुआरे उस सबक को कभी नहीं भूले. तब से किसी नाविक का किया वादा उतना ही मजबूत होता है, जितनी उसकी रस्सियों में बंधी गांठें.

और अच्छा होगा कि आप भी इस कहानी को याद रखें. क्योंकि केवल नाविकों को ही अपने वादों पर दृढ़ नहीं रहना चाहिए.